IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 1, November 2022
Impact Factor: 6.252

भारतीय ज्ञान परंपरा और दर्शन

डॉ. हृदय नारायण तिवारी
सहायक प्राध्यापक
एकलव्य विश्वविद्यालय, दमोह, मध्य प्रदेश
hntiwariojaswini@gmail.com

मानव इस संसार का बौद्धिक व विकासशील प्राणी है। यह इस संसार में अपने अस्तित्व को बनाए रखने के लिए सदैव संघर्ष एवं प्रगति करता है। वह सभ्यता के आरंभ से ही संपूर्ण ब्रह्मांड, उसके निर्माता और अपने स्वयं के जीवन के स्वरूप, समस्याओं, रहस्यों एवं लक्ष्यों के संदर्भ में जीवन पर्यंत अनवरत चिंतन करता रहता है। इसी चिंतन के परिणाम स्वरूप जो तथ्य, निष्कर्ष, विश्वास एवं सत्य प्राप्त हुए उस पर निरंतर अग्रसर होता रहा है। मानव के इन्हीं प्रयासों के फलस्वरूप ही दर्शन के संप्रत्यय का विकास हुआ। दर्शन में किसी समस्या के बारे में जानने के लिए गहराई से, निष्पक्षता से, खुले दिमाग से और तार्किक ढंग से चिंतन करने पर जोर दिया जाता है, ताकि व्यक्ति अज्ञान, जल्दबाजी, बिना सोचे- समझे और गैर जिम्मेदारी से कार्य न करें और समाज में उसका सामंजस्य न बिगड़ जाए। जैसे- एक रुपए के सिक्के के एक ओर कोई चित्र अंकित होता है और दूसरी ओर उसका मूल्य अंकित होता है। ऐसा होने पर ही वह सिक्का मूल्यवान माना जाता है। उसी प्रकार भारतीय ज्ञान परंपरा उस सिक्के के चित्र वाले हिस्से का पक्ष होती है और दूसरा पक्ष दर्शन होता है। यदि एक सिक्के पर एक ओर उसका चित्र ही हो लेकिन उसके दूसरी ओर उसका मूल्य अंकित ना हो, तो उसे कोई सिक्का नहीं कहेगा। यहां तक कि उसे भिखारी भी नहीं लेगा। यही स्थिति भारतीय ज्ञान परंपरा, शिक्षा संस्था, शिक्षक और शिक्षा व्यवस्था की होती है। यदि उसका अपना कोई दर्शन नहीं है तो वह खोटे सिक्के की भांति ही माना जाएगा। इसलिए वर्तमान में भारतीय ज्ञान परंपरा के साथ-साथ दार्शनिक दृष्टिकोण को साथ लेकर चलने की अत्यंत आवश्यकता है।

संदर्भ :

1.सक्सेना, संजय कुमार, शिक्षा के दार्शनिक सिद्धांत, आर. लाल. बुक डिपो, मेरठ, 2007
2.सिंह, नारायण, मार्क्स और गांधी का साम्य दर्शन, हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग,2000
3.सिंह, गया प्रसाद, उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक, आर. लाल बुक डिपो, मेरठ, 2013
4.लाल एवं तोमर, विश्व के श्रेष्ठ शैक्षिक चिंतक, आर. लाल बुक डिपो, मेरठ, 2008
5. त्रिपाठी, डॉ नरेश चंद्र, शिक्षा के नूतन आयाम, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा, 2007
6. दैनिक भास्कर समाचार पत्र, 11 जनवरी, 2019
7. नई दुनिया समाचार पत्र, 14 मई, 2020
8. पत्रिका समाचार पत्र, 22 जून, 2021